एम.एच.डी.

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2015 और जनवरी 2016 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी–2 : आधुनिक हिन्दी काव्य
एम.एच.डी–3 : उपन्यास एवं कहानी
एम.एच.डी–4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एम.एच.डी–6 : हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली– 110 068

सत्रीय कार्य 2015-16

पाठ्यक्रम कोड :एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें एम.एच.डी.-02, 03, 04 और 06 पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं। ये 8–8 क्रेडिट के पाठ्यक्रम हैं और आपको हर पाठ्यक्रम में एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंकों का है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक लेखों के संग्रह भेजे गए हैं। पाठ्यक्रम 2, 3, तथा 4 में 'विविधा' नाम से मूल साहित्यिक कृतियों का संकलन किया गया है। पाठ्यक्रमों में शामिल नाटक और उपन्यासों को प्राप्त करने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। आपसे अपेक्षा की जाती है कि सत्रीय कार्य करने से पहले इन सभी कृतियों को पढ़ लें।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा में पूरे जाने वाले सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपको अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

,	अनुक्रमांक :.....
	नाम : .....
	पता : .....
पाठ्यक्रम शीर्षक :.....	.....
सत्रीय कार्य कोड :.....	.....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः .....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी लिखावट में उत्तर दें।
6. सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास **जुलाई, 2015 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2016** और **जनवरी, 2016 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2016** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
2. व्याख्या से संबंधित काव्यांशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
3. आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
4. वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच क्रमबद्धता हो।
5. आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
6. उत्तर साफ और सुंदर अक्षरों में लिखें तथा जिन बातों पर बल देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दें।
7. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–2
आधुनिक हिंदी-काव्य

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने आधुनिक हिन्दी काव्य के कुल चौदह कवियों की कविताओं का अध्ययन किया है। इन कवियों की कविताएँ आधुनिक काव्य विविधा में दी गई है। इन कवियों के काव्य से संबंधित आपको विभिन्न इकाइयाँ भी अध्ययन के लिए दी गई है। इनके अतिरिक्त आपको आधुनिक काव्य विवेचना नामक पुस्तक भी अध्ययन के लिए दी गई है जिनमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों पर कई आलोचनात्मक लेख भी दिये गये है। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्न पत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ काव्याशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।
- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों और उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न कवि की विशेषता और उनके योगदान तथा उसके काव्य की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य कवियों और रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं।
- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।
- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन कमोबेश सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–2
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–2/टी.एम.ए/2015–16
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) विफल जीवन व्यर्थ बहा, बहा,
सरस दो पद भी न हुए हहा!
कठिन है कविते, तुम भूमि ही,
पर यहाँ श्रम भी सुख–सा रहा।
करुणे, क्यों रोती है? 'उत्तर' में और अधिक तू रोई –
'मेरी विभूति है जो, उसको 'भव–भूति' क्यों कहे कोई !'

ख) खुब गए
दुधिया निगाहों में
फटी बिवाइयोंवाले खुरदरे पैर

धँस गए
कुसुम–कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश–कठोर पैर

दे रहे थे गति
रबड़–विहीन ठूँठ पैडलों को
चला रहे थे
एक नहीं, दो नहीं, तीन–तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे!

ग) निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फ़व्वारा
कहा नहीं था उसने आख़िर उसकी हत्या होगी

भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो देखो बार–बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी

(घ) मैं उठता हूँ और उठकर
खिड़कियाँ, दरवाजे
और कमीज के बटन
बंद कर लेता हूँ
और फूर्ती के साथ
एक कागज पर लिखता हूँ
''मैं अपनी विफलताओं
का प्रणेता हूँ।''

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 10×4=40

(क) हिन्दी कवि के रूप में अज्ञेय के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
(ख) दिनकर के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक सरोकारों का विवेचन कीजिए।
(ग) शमशेर बहादुर सिंह की कविता में मौजूद निजता के विविध रूपों को व्याख्यायित कीजिए।
(घ) नयी कविता के प्रतिनिधि कवि के रूप में रघुवीर सहाय का मूल्यांकन कीजिए।

3. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर टिप्पणी को लगभग 250 शब्दों में लिखिएः 5×4=20

(क) राम की शक्ति पूजा
(ख) 'धूमिल' की काव्य
(ग) पंत काव्य में प्रकृति
(घ) भारतेंदु काव्य में आधुनिकता

एम.एच.डी.–3
उपन्यास एवं कहानी

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने उपन्यासों और कहानियों का अध्ययन किया है। पाठ्यक्रम में कुल पाँच उपन्यास और 14 कहानियाँ हैं जिन पर कुल 27 इकाइयों का आपने अध्ययन किया है। इनके अतिरिक्त 'हिन्दी कहानी विवेचना' नामक पुस्तक में आपको पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यासों और कहानियों पर अतिरिक्त सामग्री दी गयी है। आपको इस पाठ्यक्रम की संपूर्ण सामग्री का गंभीरता से अध्ययन करना होगा। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षापत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इस पाठ्यक्रम से संबंधित एक ही सत्रीय कार्य करना होगा। इस सत्रीय कार्य में आपको दो तरह के प्रश्न करने होंगे। निबंधात्मक प्रश्न और टिप्पणीपरक प्रश्न। प्रश्नों का उत्तर पाठ्यक्रम का अध्ययन कर, सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। प्रश्न को समझकर उत्तर लिखें। पाठ्य सामग्री से नकल न करें।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–3

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–3/टी.एम.ए./2015–2016

कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 12×5=60

1. 'गोदान' के नारी पात्र धनिया और मालती का तुलनात्मक चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. 'सूखा बरगद' में अभिव्यक्त रूढ़ियों और नए मूल्यों के द्वंद्व को रेखांकित कीजिए।
3. 'मैला आँचल' के राजनीतिक संदर्भों पर प्रकाश डालिए।
4. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में अभिव्यक्त नारी चेतना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5. 'त्रिशंकु' कहानी के आधार पर परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व की विवेचना कीजिए।
6. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 8×5=40
   - (क) 'पुरस्कार' की मधुलिका
   - (ख) कहानी के पिता
   - (ग) 'यह अंत नहीं' में प्रतिरोध
   - (घ) 'भोलाराम का जीव' की भाषा-शैली
   - (ङ) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास

एम.एच.डी.–4
नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयाँ हैं। इनके अतिरिक्त आपको 'हिंदी गद्य विवेचना' के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्न पत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, चरित्र-चित्रण, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।

- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।

- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-4
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–4/टीएमए/2015–16
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) धर्म अधर्म एक दरसाईं।
राजा करे सो न्याव सदाई।
भीतर स्वाहा बाहर सादे।
राजा करहि अगले अरु प्यादे
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा
मानहुँ राजा रहत विदेसा!

ख) हर-एक के पास एक-न-एक वजह होती है। इसने इसलिए कहा था। उसने उसलिए कहा था। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो जब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ? हर वक्त की धतकार, हर वक्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की?

ग) रसखान तो किसी की 'लकुटी अरु कामरिया' पर तीनों पुरों का राजसिंहासन तक त्यागने को तैयार थे पर देश प्रेम की दुहाई देने वालों में से कितने अपने किसी थके-माँदे भाई के फटे पुराने कपड़ों और धूल भरे पैरों पर रीझकर, या कम से कम न खीझकर, बिना मन मैला किए कमरे की फर्श भी मैली होने देंगे? मोटे आदमियों तुम जरा-सा दुबले हो जाते – अपने अँदेशे से ही सही – तो न जाने कितनी ठटरियों पर माँस चढ़ जाता।

घ) जीवन की ऐसी आकस्मिक घटनाएँ ही वास्तव में जीवन को दिशा देती है, और जिसे हम 'नियति' का गंभीर-सा नाम देते हैं वह शायद बहुत नगण्य-सी लगने वाली घटनाओं से अपने बड़े-बड़े लक्ष्य प्राप्त करती रहती है। क्या मेरे अंदर का कहानीकार मर गया? मरता जीवन में कुछ भी नहीं, केवल रूप बदलता है। कहानीकार मेरे कवि में आत्मसात् हो गया।

2 'स्कंदगुप्त' के आधार पर प्रसाद की इतिहास दृष्टि का उल्लेख करते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 10

3. 'अंधायुग' की रचनात्मक विशिष्टताओं का मूल्यांकन कीजिए। 10

4. ललित निबंध की दृष्टि से 'कुटज' का मूल्यांकन कीजिए। 10

5. अज्ञेय ने निराला को 'वसंत का अग्रदूत' क्यों कहा है? पठित संस्मरण के आधार पर अपना मत प्रस्तुत कीजिए। 10

6 निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) ऑक्टेवियो पॉज का साक्षात्कार

(ख) 'ताँबें के कीड़े' का कथ्य

(ग) 'ठकुरी बाबा' की भाषा

(घ) 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' में व्यंग्य

एम.एच.डी.-6
हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

एम.ए. हिंदी का यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। ''हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास'' में आपने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों, हिंदी गद्य साहित्य और भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

सत्रीय कार्य का एक और उद्देश्य है – सत्रांत परीक्षा के लिए आपको तैयार करना। सत्रांत परीक्षा में जो सवाल आपसे पूछे जाएँगे उनका ढाँचा सत्रीय कार्य में पूछ गए सवालों जैसा ही होगा। इसीलिए सत्रीय कार्य को आप गंभीरता से लें। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में पूछे गए सवाल दो प्रकार के होंगे।

कुछ प्रश्न निबंधात्मक या विवेचनात्मक होंगे जो पाठ्यक्रम में शामिल हिंदी काव्य प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य तथा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास से संबंधित हो सकते हैं।

दूसरे प्रकार के प्रश्नों में आपको विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक/आलोचना टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। निबंधात्मक प्रश्नों के लिए लगभग 60 प्रतिशत तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न 60 से 80 प्रतिशत के हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 8 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी-6
सत्रीय कार्य कोडः एमएचडी-6/टीएमए/2015-2016
कुल अंक 100

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास के संदर्भ में काल विभाजन की समस्या पर विचार कीजिए। 12
2. भक्तिकाव्य की निर्गुण काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 12
3. भारतेन्दु युगीन गद्य साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए। 12
4. हिन्दी आलोचना के विकास में रामचंद्र शुक्ल के योगदान की समीक्षा कीजिए। 12
5. हिन्दी भाषा और उसकी बोलियों के संबंधों पर प्रकाश डालिए। 12
6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : 8X5=40
   क) रीतिबद्ध काव्य
   ख) द्विवेदीयुगीन गद्य
   ग) रामकाव्य की भक्ति धारा
   घ) हिन्दी के आरंभिक उपन्यास
   ङ) प्रेमचंद का कथा साहित्य